

डॉ. गैरी येट्स, 12 की पुस्तक, सत्र 10, आमोस, न्याय के दर्शन और पुनर्स्थापना का वादा, आमोस 7-9

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा लघु भविष्यवक्ताओं पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 10 है, न्याय के दर्शन और पुनर्स्थापना का वादा, आमोस 7-9।

आमोस की पुस्तक का तीसरा और अंतिम भाग आमोस अध्याय 7 से 9 में पाया जाता है। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि पुस्तक की समग्र संरचना और संदेश क्या है। पुस्तक की शुरुआत प्रभु द्वारा सिथ्योन से सिंह की तरह दहाड़ने और तूफान की तरह गरजने से होती है।

वह न्याय करने के लिए सामने आने वाला है। अध्याय 1 और 2 में, परमेश्वर राष्ट्रों का न्याय करने जा रहा है। आश्चर्य की बात यह थी कि राष्ट्रों में यहूदा और इस्राएल दोनों शामिल थे, जो परमेश्वर के लोग थे।

परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में उनकी स्थिति उन्हें छूट नहीं देगी। पृथ्वी के राष्ट्रों ने अपने अपराधों, अपनी हिंसा, अन्य लोगों के खिलाफ अपने सामाजिक पापों के द्वारा नूह की वाचा का उल्लंघन किया था। इस्राएल और यहूदा ने परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ा था जो मूसा के कानून और मूसा की वाचा में पाई जाती थीं।

लेकिन ये सभी राष्ट्र पाप या पाशा के दोषी थे। उन्होंने विद्रोह किया था और वाचा का उल्लंघन किया था। अध्याय 3 से 6 में, हमारे पास पुस्तक का दूसरा भाग है और यह इस बात का विस्तार है कि परमेश्वर अपने लोगों इस्राएल का न्याय क्यों करने जा रहा है।

यह न्याय की प्रकृति, न्याय के कारणों और उसकी सीमा के बारे में बात करता है। फिर से इस्राएल के सामाजिक पापों, उनके अन्याय के व्यवहार और इस तथ्य पर महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया है कि उनकी पूजा ईश्वर के प्रति निष्ठाहीन है। आमोस के हमारे अध्ययन की शुरुआत में, हमने देखा कि उसके उपदेश में तीन प्रमुख चिंताएँ हैं।

यह उन लोगों के लिए चेतावनी है जो अपनी संपत्ति में आत्मसंतुष्ट हैं, उन लोगों के लिए चेतावनी है जो न्याय का पालन नहीं कर रहे हैं, और उन लोगों के लिए चेतावनी है जो पूजा करने के लिए औपचारिकताएं निभा रहे हैं। ये विवरण हमारे लिए अध्याय 3 से 6 में दिए गए हैं और हमारे लिए विस्तार से बताए गए हैं। न्याय के बीच और सैन्य आपदा और हार की चेतावनी जो इज़राइल पर आने वाली है, पश्चाताप करने के लिए भी आह्वान किया गया है। ईश्वर की खोज करो और जीवित रहो।

इस्राएल के लिए न्याय से छूट पाना अभी भी बहुत देर की बात नहीं है। जैसे-जैसे हम अध्याय 7 से 9 की ओर बढ़ते हैं, पुस्तक का तीसरा भाग, हमें फिर से न्याय का एक निरंतर संदेश मिलेगा। यह आमोस की पूरी पुस्तक की विशेषता है।

ईश्वर दहाड़ता हुआ सिंह और गरजता हुआ तूफान है। पुस्तक के इस विशेष भाग में न्याय का यह संदेश, एक अलग तरीके से, लोगों को उनके साथ होने वाली घटना की गंभीरता और अशुभ प्रकृति को देखने में मदद करने का एक विपरीत तरीका है, यह न्याय का संदेश पाँच दर्शनों की एक श्रृंखला में व्यक्त किया गया है। भविष्यवक्ता ईश्वर के संदेशवाहक थे।

उन्होंने कहा, ऐसा प्रभु कहते हैं, लेकिन अक्सर, जिस तरह से परमेश्वर इन संदेशों को भविष्यवक्ताओं को प्रकट करता था, वह यह था कि वे दर्शन देखते थे। अक्सर, ये दर्शन प्रतीकात्मक रूप से दर्शाते थे कि परमेश्वर ने क्या करने की योजना बनाई थी और भविष्य में परमेश्वर क्या करने का इरादा रखता था। फिर भविष्यवक्ता, मुझे लगता है कि न्याय के संदेश को और अधिक जीवंत और वास्तविक और नाटकीय बनाने के तरीके से, अक्सर लोगों को इन दर्शनों की व्याख्या करते थे और उन्हें इसके महत्व को समझने में मदद करते थे, जो प्रतीकात्मकता शामिल थी।

आमोस, अध्याय 7 से 9 में न्याय के पाँच दर्शनों की एक श्रृंखला है। अंत में, पुस्तक के अंत में, सभी भविष्यवक्ता न्याय और उद्धार दोनों के संदेशवाहक थे। अंत में, पुस्तक के अंत में, आमोस अध्याय 9, श्लोक 11 से 15 में, हमें अंततः इस्राएल के भविष्य के लिए बहाली और आशा का वादा मिलता है। कुछ अर्थों में, जैसा कि हम पुराने नियम में भविष्यवाणियों की पुस्तकों के संग्रह को देखते हैं, आमोस न्याय के सबसे निर्मम भविष्यवक्ताओं में से एक है।

लेकिन इस पुस्तक के अंत में भी, 90% लोगों के न्याय में ले जाए जाने या मरने की बात की गई है, इस्राएल को एक भेड़ की तरह शेर के मुंह से निकाला गया है, जहां एक कान, एक पूंछ और एक पैर के एक छोटे से हिस्से के अलावा कुछ भी नहीं बचा है। यहां तक कि एक ऐसी पुस्तक में जहां न्याय इतना गंभीर और इतना तीव्र है, अंत में एक वादा है कि, अंततः, परमेश्वर उन्हें बहाल करने जा रहा है। हम अध्याय 9, श्लोक 11 से 15 में उस अंश को देखने जा रहे हैं, और बेहतर ढंग से समझने की कोशिश करेंगे कि भविष्यवक्ताओं का अंतिम संदेश क्या था। वह आशा क्या थी जो वे इस्राएल को दे रहे थे? और फिर, जब हम नए नियम में दिए गए व्यापक रहस्योद्घाटन और पूर्ण रहस्योद्घाटन को देखते हैं तो उस आशा को कैसे समझा और विकसित किया जाता है? सबसे पहले, आमोस 7-9 में, आइए न्याय के पाँच दर्शनों को देखें।

मैं इनमें से प्रत्येक दर्शन को समझने का प्रयास करना चाहता हूँ, कि वे किसका प्रतीक हैं, और वे क्या संदेश देते हैं। अध्याय 7 में, आमोस कहता है, "यह वही है जो प्रभु परमेश्वर ने मुझे दिखाया। देखो, वह टिड्डियाँ बना रहा था, जबकि बाद की वृद्धि अभी-अभी शुरू हुई थी।

और देखो, यह राजा के घास काटने के बाद की आखिरी फसल थी। जब वे भूमि की घास खा चुके, तो मैंने कहा, हे प्रभु परमेश्वर, कृपया क्षमा करें। याकूब कैसे खड़ा हो सकता है? वह बहुत छोटा है।

प्रभु परमेश्वर ने इस बारे में नरमी दिखाई। प्रभु ने कहा, ऐसा नहीं होगा। आमोस 7:3 में हमें जो पहला दर्शन मिलता है, वह यह है कि आमोस ने इस्राएल की भूमि पर टिड्डियों के आक्रमण का दर्शन देखा।

यह कुछ ऐसा है जो प्राचीन निकट पूर्व के इस हिस्से में आम तौर पर होता था। यह कुछ ऐसा है जो आज भी दुनिया के उस हिस्से में होता है। व्यवस्थाविवरण 28 में, फसलों को नष्ट करने वाले टिड्डियों का आक्रमण उन वाचा शापों में से एक था जिसका उल्लेख प्रभु ने लोगों के विरुद्ध भेजने के लिए किया था।

अध्याय 4 में, उन्होंने हाल ही में इसका अनुभव किया था। और इसलिए, आमोस एक दर्शन देखता है। अब यह टिड्डि विपत्ति पूरी तरह से भूमि पर छा जाने वाली है, इसे पूरी तरह से तबाह कर देगी।

और इसके परिणामस्वरूप, आमोस एक मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। वह लोगों के लिए मध्यस्थता करता है, और वह कहता है, परमेश्वर, क्या आप समझते हैं कि इस्राएल का राष्ट्र इतना छोटा है, वे इस टिड्डे की महामारी जैसी कृषि और आर्थिक तबाही से बच नहीं सकते? आश्चर्यजनक बात यह है कि पुराने नियम का परमेश्वर, जिसे अक्सर क्रोधित, प्रतिशोधी, क्रोधी परमेश्वर के रूप में चित्रित किया जाता है, परमेश्वर आमोस की प्रार्थनाओं के प्रति उत्तरदायी है।

और यह कहता है कि प्रभु परमेश्वर ने अपना मन बदल लिया। दूसरे तरीके से हम इसका अनुवाद कर सकते हैं, उसने अपना मन बदल लिया। और जब हम भविष्यवक्ता मीका के बारे में बात करेंगे तो हम इस पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

लेकिन यहाँ हम परमेश्वर के धैर्य, परमेश्वर की दया को देखते हैं। याद रखें कि वाचा में, परमेश्वर ने निर्गमन अध्याय 34 पद 6 में कहा था कि वह करुणामय और दयालु परमेश्वर है। विशेष रूप से, उस करुणा का एक हिस्सा पापों को क्षमा करने की इच्छा शामिल है और वह क्रोध करने में धीमा है।

हिब्रू में कहा गया है कि उसकी नाक लंबी है। दूसरे शब्दों में, आप नाक के बारे में सोचते हैं, जब कोई व्यक्ति क्रोधित होता है और क्रोध में फटने के लिए तैयार होता है तो नाक के छिद्र फड़कने लगते हैं या लाल हो जाते हैं। परमेश्वर ऐसा करने में धीमा है।

और यद्यपि आमोस जिस न्याय के बारे में चेतावनी दे रहा है वह भयानक, भयंकर और महत्वपूर्ण होने वाला है, लोगों को इसके लिए तैयार रहने की आवश्यकता है। प्रभु यह भी दर्शा रहे हैं कि कई तरीकों से, वह लोगों को पश्चाताप करने के कई अवसर दे रहे हैं। हम पुराने नियम में भी देखते हैं कि जब परमेश्वर इस्राएल और यहूदा दोनों का न्याय करने की तैयारी करता है, तो वह लगातार समय-सीमाएँ आगे बढ़ाता है।

राजनेता जब समय पर काम पूरा नहीं कर पाते हैं तो वे लचीली समय-सीमा की बात करते हैं। लेकिन परमेश्वर के पास लचीली समय-सीमाएँ थीं क्योंकि वह लोगों को पश्चाताप करने के लिए

अधिक से अधिक अवसर दे रहा था। इसलिए जब भविष्यवक्ता प्रार्थना करता है, तो परमेश्वर नरम पड़ जाता है और न्याय नहीं भेजता।

प्रभु इस्राइल के इतिहास के अंत में इस तरह से कार्य कर रहे हैं जो कि इस्राइल के इतिहास की शुरुआत में उनके द्वारा किए गए कार्य के अनुरूप है। निर्गमन अध्याय 32 में, पाप के बाद जब इस्राइल ने सोने के बछड़े की पूजा की थी और प्रभु के खिलाफ वाचा का उल्लंघन किया था, इस रिश्ते की शुरुआत में ही, परमेश्वर ने मूसा से कहा, पीछे हट जाओ; मैं इन लोगों को नष्ट करने जा रहा हूँ; मैं तुम्हारे साथ फिर से शुरुआत करूँगा। इस बीच, मूसा ने एक भविष्यवक्ता के रूप में अपने लोगों के लिए मध्यस्थता की।

उसने कहा, हे प्रभु, जब मिस्र के लोग सुनेंगे कि आपने अपने लोगों को नष्ट कर दिया है तो वे क्या कहेंगे? इसके परिणामस्वरूप, हमारे पास वही भाषा है जो यहाँ आमोस में इस्तेमाल की गई है। परमेश्वर नरम पड़ जाता है। वह अपना मन बदल लेता है।

वह न्याय नहीं भेजता है, और इस कारण इस्राएल के लोग बच जाते हैं। यही बात गिनती 14 में जासूसों की रिपोर्ट के प्रति प्रभु की प्रतिक्रिया के साथ भी घटित होती है। जब लोग अधिकांश जासूसों की बात सुनते हैं, तो वे उस देश में जाने से इनकार कर देते हैं।

परमेश्वर ने फैसला किया कि वह अपने लोगों का न्याय करेगा, वह उन्हें नष्ट कर देगा। मूसा ने फिर से मध्यस्थता की और परमेश्वर ने न्याय भेजने से मना कर दिया। भविष्यवक्ता शमूएल हमें याद दिलाता है कि भविष्यवक्ताओं की भूमिका इस्राएल के लोगों के लिए मध्यस्थता करना था।

जब वे राजा की मांग करके परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं और प्रभु इस नाटकीय तूफान को ऐसे समय पर भेजते हैं जब आप इस्राएल की भूमि में इसकी उम्मीद नहीं करेंगे, तो लोग पहचानते हैं कि परमेश्वर उनसे नाराज़ है, और वे शमूएल से विनती करते हैं और विनती करते हैं कि वह उनके लिए मध्यस्थता करना जारी रखे ताकि प्रभु उन्हें नष्ट न करे। शमूएल कहता है कि परमेश्वर न करे कि मैं अपने लोगों के लिए प्रार्थना करने में विफल होकर पाप करूँ। भविष्यवक्ता आज के पादरियों के लिए एक महान उदाहरण हैं, और परमेश्वर के लोगों के रूप में हमारी भूमिकाओं में से एक उन लोगों के लिए मध्यस्थ बनना है जो हमारी देखभाल में हैं और जिन लोगों की हम सेवा करते हैं।

मुझे लगता है कि यह किसी भी पुरुष या महिला के लिए सच है जिसे पादरी की जिम्मेदारी दी गई है। हमें उन लोगों के लिए मध्यस्थता करनी चाहिए जो हमारी देखभाल में हैं और जिनकी सेवा करने के लिए हमें बुलाया गया है। यहूदा के लोगों का न्याय करने के लिए परमेश्वर के महत्वपूर्ण तरीकों में से एक यह है कि आमोस के समय के बाद, जब यह बात आती है कि परमेश्वर ने फैसला किया है कि वह अपने लोगों का न्याय करने जा रहा है, तो वे नहीं बचेंगे, वे उस निर्णय को नहीं टालेंगे जो परमेश्वर उनके खिलाफ भेजने जा रहा है।

प्रभु यिर्मयाह से कहते हैं, इन लोगों के लिए मध्यस्थता मत करो। इन लोगों के लिए प्रार्थना मत करो। यह एक महत्वपूर्ण निर्णय है क्योंकि यह भविष्यवक्ताओं की मध्यस्थता थी जिसने अंततः लोगों को परमेश्वर के क्रोध और प्रकोप से बचाया था।

परमेश्वर ने यिर्मयाह से यहाँ तक कहा, भले ही मूसा और शमूएल इस्राएल के अतीत में महान मध्यस्थ रहे हों, भले ही वे इन लोगों के लिए मध्यस्थता करें, मैं उनकी प्रार्थनाओं को नहीं सुनूँगा। हालाँकि, आमोस की सेवकाई और इस्राएल राष्ट्र के जीवन में इस बिंदु पर, परमेश्वर अभी भी उन्हें न्याय से बचाने के लिए तैयार है, और भविष्यवक्ता की मध्यस्थता के जवाब में, प्रभु अपना मन बदल लेता है और वह न्याय नहीं भेजता है जिसकी उसने शुरू में योजना बनाई थी। मुझे लगता है कि, भविष्यवक्ता यहजेकेल से यहूदा के इतिहास में इस बाद के समय से निपटने पर, हम यहाँ जिस बारे में बात की जा रही है उसके बिल्कुल विपरीत देखते हैं क्योंकि हम इस आयत को यहजेकेल अध्याय 22 आयत 30 में पढ़ते हैं।

वहाँ, प्रभु कहते हैं, मैंने उनमें से एक ऐसे व्यक्ति की तलाश की जो दीवार का निर्माण करे और देश के लिए मेरे सामने दरार में खड़ा हो, ताकि मैं इसे नष्ट न करूँ, लेकिन मुझे कोई नहीं मिला। भगवान द्वारा बेबीलोन के निर्वासन का न्याय लाने के कारणों में से एक यह था कि वह एक आमोस, एक मूसा, एक शमूएल की तलाश कर रहा था जो खड़ा हो और शायद लोगों के लिए मध्यस्थता करे या उन्हें पश्चाताप के लिए वापस बुलाए। वहाँ कोई नहीं था।

इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर को अंततः न्याय करना पड़ा। यदि हम कभी ऐसी स्थिति में आते हैं जहाँ हम सोचते हैं कि किसी एक व्यक्ति की प्रार्थना, कार्य, शब्द और पश्चाताप अंततः मायने नहीं रखते हैं, तो हमारे पास पुराने नियम में बिखरे हुए ऐसे उदाहरण हैं जहाँ एक व्यक्ति ने प्रार्थना की, और अंततः, एक राष्ट्र न्याय से बच गया। एक ईसाई के रूप में, मैं एक ईसाई घर में पला-बढ़ा हूँ, और मैं जानता हूँ कि मेरे पिता प्रार्थना करने वाले व्यक्ति हैं।

मैं अक्सर सोचता हूँ कि उस एक आदमी की प्रार्थनाओं का क्या असर हुआ, मेरे जीवन और मेरी सेवकाई पर उनका क्या असर हुआ? जब उसने मेरे बच्चों के लिए प्रार्थना की, तो उसका उसके पोते-पोतियों पर क्या असर हुआ? मैं इसके लिए आभारी हूँ। परमेश्वर अविवाहित व्यक्तियों की प्रार्थनाएँ सुनता है। प्रभु ने आमोस की प्रार्थना सुनी।

यहाँ टिड्डियों के झुंड का एक दृश्य है। भगवान नरम पड़ जाते हैं। यहाँ न्याय के पाँच दृश्य हैं।

फिर से, लोगों को न्याय से बचाने के लिए परमेश्वर की इच्छा का एक और अनुस्मारक है। हम दूसरे दर्शन में भी यही बात देखते हैं। अध्याय 7, श्लोक 4। यह वही है जो प्रभु परमेश्वर ने मुझे दिखाया।

देखो, प्रभु परमेश्वर आग से न्याय की पुकार लगा रहा था। इसने महान गहराई को भस्म कर दिया, और यह भूमि को खा रहा था। यहाँ हमारे पास न्याय का चित्रण है, एक ऐसी आग का दर्शन जो भूमि में फैल जाएगी।

अगर आपने कभी जंगल में आग देखी है, तो आप इसकी विनाशकारी शक्ति को जानते होंगे। अध्याय 1 और अध्याय 2 में, जब परमेश्वर अलग-अलग राष्ट्रों के न्याय की बात करता है, तो वह कहता है, मैं इन विभिन्न शहरों की दीवारों पर आग भेजूँगा। खैर, अब वह आग इस्राएल की भूमि को भस्म कर रही है।

आमोस को एहसास हुआ, टिट्टियों की महामारी से भी ज़्यादा, कि यह ऐसी चीज़ है जिससे इसराइल बच नहीं सकता। वह भगवान को पुकारता है। वह कहता है, भगवान, कृपया रुकें।

याकूब बहुत छोटा है। वे न्याय के इस हमले का सामना कैसे कर सकते हैं? फिर से, परमेश्वर नरम पड़ जाता है। दूसरी बार, परमेश्वर इस लोगों को बचाने के लिए दोगुना इच्छुक है।

लेकिन हम आगे आने वाले दर्शनों में देखेंगे, दर्शन 1 और 2 के बाद, दर्शन 3, 4 और 5 में, न्याय अपरिवर्तनीय हो गया है। मुझे लगता है कि परमेश्वर के लोगों के जीवन में हमेशा एक ऐसा बिंदु होता था। यह इस्राएल में यहूदा की तुलना में पहले हुआ था, जहाँ ये लचीली समय-सीमाएँ थीं जहाँ परमेश्वर उन्हें पश्चाताप करने के अवसर देता था, लेकिन अंततः एक ऐसा बिंदु था जहाँ परमेश्वर ने कहा कि बहुत हो गया। परमेश्वर का धैर्य, परमेश्वर की करुणा, और परमेश्वर का क्रोध करने में धीमापन, यहाँ तक कि इसकी भी एक सीमा है।

हम यहाँ संभावित न्याय से लेकर अपरिहार्य न्याय तक की गति को देखते हैं जो अनिवार्य रूप से घटित होने वाला है। यह इन दर्शनों में भी होता है। तीसरा न्याय भाषण साहुल रेखा का दर्शन है जो हमें अध्याय 7, श्लोक 7 से 9 में दिया गया है। यहाँ दर्शन है।

आमोस इसे दृश्य रूप में देखता है और फिर लोगों को यह चित्र और छवि समझाता है। देखो, मैं अपने लोगों, इस्राएल के बीच में एक साहुल लगा रहा हूँ। मैं फिर कभी उनके पास से नहीं गुज़रूँगा।

इसहाक के ऊंचे स्थान उजाड़ दिए जाएंगे, इस्राएल के पवित्र स्थान बर्बाद कर दिए जाएंगे, और मैं यारोबाम के घराने के विरुद्ध तलवार उठाऊँगा। अब, परमेश्वर जिस न्याय से पीछे हटता है, ऊंचे स्थान उजाड़ दिए जाएंगे, पवित्र स्थान बर्बाद कर दिए जाएंगे, यारोबाम का घराना, मैं उसके विरुद्ध तलवार चलाने जा रहा हूँ। इस्राएल जिन चीज़ों पर भरोसा कर रहा था कि वे उन्हें परमेश्वर के अलावा सुरक्षा प्रदान करेंगी और उनके साथ सही तरह का रिश्ता बनाए रखेंगी, पवित्र स्थान और उनके नेता, और वे चीज़ें परमेश्वर के न्याय का लक्ष्य बन जाती हैं।

इसका कारण यह है कि परमेश्वर अपने लोगों के बीच में उनके विरुद्ध एक साहुल रेखा स्थापित करता है, और वे परमेश्वर के नियम और धार्मिकता के मानकों पर खरे नहीं उतरते। अब, यहाँ दिए गए दर्शन की यही पारंपरिक समझ है। हमारे पास इस शब्द अनाक का अनुवाद साहुल रेखा शब्द से है।

प्लंब लाइन एक डोरी या रस्सी होती है जिसके सिरे पर वजन होता है। प्लंब लाइन का उद्देश्य यह है कि इस मापने वाली रेखा का उपयोग दीवार की सीधीता को मापने के लिए किया जाता है। इसलिए, जब बिल्डर द्वारा प्लंब लाइन को नीचे उतारा जाता है, तो बिल्डर यह निर्धारित कर सकता है कि यह दीवार सीधी है या नहीं। क्या यह सुरक्षित है? यदि यह झुकी हुई है, यदि यह बहुत सीधी नहीं है, तो अंततः इसे नष्ट किया जा सकता है।

वह दीवार अपने ही भार से ढह जाएगी। यही इस्राएल के साथ हुआ है। परमेश्वर अपनी धार्मिकता और अपने नियम का मानक स्थापित करता है।

परमेश्वर ने कहा था, तुम्हें अपने पड़ोसी के प्रति न्याय का पालन करना है। तुम्हें अपनी मुट्टी को कड़ा नहीं रखना है। तुम्हें अपने पड़ोसी के प्रति खुला हाथ रखना है।

जब इस्राएल ने ऐसा नहीं किया और जब उन्होंने परमेश्वर के नियमों के अनुसार जीवन नहीं जिया, तो दीवार नहीं टिकी और अंततः वह दीवार ढह जाएगी। परमेश्वर उस दीवार को गिरा देगा क्योंकि यह वह नहीं है जिसके लिए उसने इसे बनाया था। यह उस कार्य को पूरा नहीं कर सकती जिसके लिए इसे बनाया गया था।

झुकी हुई दीवार अंततः सुरक्षित नहीं होती और सुरक्षा प्रदान नहीं करती। यहाँ यह दिलचस्प है कि जो चीज़ सामान्य रूप से इस्तेमाल की जाती है, हम साहुल रेखा के बारे में सोचते हैं, उसका इस्तेमाल इमारत और किसी चीज़ के निर्माण के लिए किया जाता है। यहाँ साहुल रेखा किसी ऐसी चीज़ का दृश्य बन जाती है जिसे गिराया जाने वाला है।

इस विशेष छवि का एक विडंबनापूर्ण उपयोग है। हालाँकि, इस विशेष मार्ग के साथ कुछ व्याख्यात्मक प्रश्न भी हैं। यहाँ जिस शब्द अनाक का उपयोग किया गया है, यह एकमात्र स्थान है जहाँ यह विशेष शब्द पुराने नियम में दिखाई देता है।

मापन रेखा या साहुल रेखा के लिए सामान्यतः जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह हिब्रू शब्द काव है। मापन रेखा के लिए काव शब्द का प्रयोग 2 राजा अध्याय 21 पद 13 जैसे अंशों में किया गया है। तथ्य यह है कि उस शब्द का प्रयोग यहाँ नहीं किया गया है, जिससे टिप्पणीकारों के मन में कुछ प्रश्न उठे हैं।

उन्होंने चर्चा की, क्या इस अंश का अर्थ पारंपरिक रूप से दिए गए अर्थ से अलग हो सकता है? इस शब्द अनाक के लिए समानार्थी साक्ष्य के आधार पर एक वैकल्पिक व्याख्या। फिर से, कभी-कभी यह हमारे लिए समस्याग्रस्त हो जाता है जब हम पुराने नियम में शब्दों का अर्थ निर्धारित करने का प्रयास करते हैं जब उनका उपयोग केवल एक या दो बार या मुट्टी भर बार किया जाता है। अक्कादियन भाषा के समानार्थी साक्ष्य के आधार पर, अक्कादियन ऋण शब्द जो अनाक से संबंधित है, का अर्थ टिन है।

इस दृष्टि का क्या अर्थ हो सकता है, हम पारंपरिक दृष्टिकोण अपना सकते हैं, और मुझे लगता है कि शायद यही व्याख्या का सबसे अच्छा तरीका है, जब तक कि हमें कुछ ऐसा न मिल जाए जो इसे बेहतर तरीके से समझा सके। लेकिन यह विचार कि ईश्वर ने इस्राएल की दीवारों को टिन से बनाया है, और यह कि इस्राएल की रक्षा के लिए बनाई गई दीवारें इस सस्ती सामग्री से बनी हैं, यह दुश्मन के हमले के प्रति उनकी भेद्यता को व्यक्त कर सकता है जो उन्हें घेरने वाला है। उन्हें लगता है कि वे ऊंचे स्थान हैं।

वे सोचते हैं कि वे पवित्र स्थान हैं। वे सोचते हैं कि यारोबाम का घर, वे सोचते हैं कि यही उसे सुरक्षित बनाता है। हालाँकि, आखिरकार, वे दीवारें टिन से ज़्यादा कुछ नहीं हैं।

इसका उल्टा यिर्मयाह 1, श्लोक 18 में है, जहाँ जब प्रभु भविष्यवक्ता यिर्मयाह को बुलाते हैं, तो वे कहते हैं, मैं तुम्हें एक किलाबंद शहर, एक लोहे का खंभा और एक पीतल की दीवार बनाने जा रहा हूँ। तुम अपने दुश्मनों के हमले का सामना करने में सक्षम होगे। हालाँकि, यहाँ हम इस्राएल की दीवारों को टिन के रूप में चित्रित कर रहे हैं जो आसानी से ढहने वाली हैं।

मैं किताब पढ़ाते समय पारंपरिक व्याख्या के साथ ही रहूँगा। मेरा मानना है कि साहुल रेखा इसके लिए सबसे अच्छी व्याख्या है, लेकिन यह एक वैकल्पिक संभावना है। एक कारण यह है कि शब्द अनक, यह असामान्य शब्द यहाँ इस्तेमाल किया जा सकता है, क्योंकि यह शब्द अनाह से बहुत मिलता-जुलता लगता है, जो शोक के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है।

यहाँ हमारे पास कुछ प्रकार के भविष्यसूचक शब्द-खेल या विडंबना हो सकती है जहाँ अनाक और अनाह और शोक जो होने वाला है क्योंकि वे इस मृत्यु और ईश्वर के न्याय का अनुभव करते हैं, यह इसका हिस्सा हो सकता है। ये पहले तीन दर्शन हैं। टिड्डियों की विपत्ति का दर्शन, ईश्वर नरम पड़ जाता है।

आग का दर्शन, परमेश्वर न्याय करने जा रहा है। आमोस प्रार्थना करता है, परमेश्वर नरम पड़ जाता है। हालाँकि, दर्शन तीन में, साहुल रेखा बिछाई जाती है।

इस्राएल परमेश्वर के मानकों के अनुरूप नहीं है, और जिन चीजों पर उन्होंने भरोसा किया है कि वे उन्हें सुरक्षा प्रदान करेंगी, वे उनकी मदद नहीं करेंगी। इन दर्शनों के बीच में, हमें आमोस 7, पद 10 से 17 में एक कथात्मक अंतराल मिलता है। जैसा कि हम इसे अंग्रेजी पाठकों के रूप में पढ़ते हैं, अक्सर पुराने नियम में कविता और गद्य को मिलाने का तरीका हमें अजीब लगता है।

लेकिन हमारे पास कई ऐसे प्रसिद्ध अंश हैं जहाँ लेखक विशिष्ट अलंकारिक कारणों से गद्य और कविता का संयोजन करता है। उदाहरण के लिए, निर्गमन 14 और 15 में, हमारे पास मिस्रियों की विजय और पराजय का गद्य वर्णन है। भगवान ने उनके रथों को समुद्र में डुबो दिया।

फिर हमारे पास इसका एक काव्यात्मक उत्सव भी है। न्यायियों के अध्याय 4 और 5, दोनों ही युद्ध में इस्राएलियों की जीत का वर्णनात्मक विवरण हैं, फिर एक काव्यात्मक उत्सव है कि कैसे परमेश्वर ने अपने दुश्मनों को हराने के लिए इस्राएल की सेना का इस्तेमाल किया। कविता और गद्य को अक्सर एक साथ जोड़ा जा सकता है।

यिर्मयाह 30 और 31 में, काव्यात्मक भविष्यवाणियाँ पुनर्स्थापना का वादा करती हैं और परमेश्वर इस्राएल के भाग्य को बहाल करता है। अध्याय 32 और 33, इसके साथ-साथ चलने वाली कहानियाँ। तो, यह सिर्फ इतना नहीं है कि, अरे, चलो यहाँ एक कहानी डालें।

इसके पीछे एक खास उद्देश्य है, और मुझे लगता है कि अध्याय 7, 10 से 17 में इस कथात्मक विवरण का कारण, प्रभु के वचन की अस्वीकृति को दर्शाना है। परमेश्वर ने आमोस को इस्राएल में जाकर प्रचार करने के लिए बुलाया है। इसके बीच में कुछ अनोखी परिस्थितियाँ थीं।

आमोस कोई भविष्यवक्ता नहीं था। वह एक चरवाहा था। ऐसा लगता है कि वह एक धनी ज़मींदार था जिसके पास पशुधन के मामले में काफ़ी ज़मीन थी।

उसके पास बहुत सी ज़मीन थी जिसका इस्तेमाल गूलर के पेड़ उगाने के लिए किया जाता था। लेकिन इसी बीच, परमेश्वर ने उसे यह असामान्य काम करने के लिए बुलाया जहाँ वह सीमा पार करके इस्राएल में प्रचार करने गया। लेकिन जब वह वहाँ प्रचार करने गया, तो हमें वह प्रतिक्रिया मिली जो अमस्याह नाम के इस पुजारी के ज़रिए उसके संदेश पर दी गई थी।

और अमस्याह ने उससे कहा, देखो, हमने तुम्हारे उपदेश बहुत सुने हैं। हम नहीं चाहते कि तुम अब यहाँ रहो। राजा के पवित्रस्थान के विरुद्ध उपदेश देना बंद करो।

बेथेल में फिर कभी भविष्यवाणी न करें और घर चले जाएँ। यह आमोस के वचन की आधिकारिक अस्वीकृति है। और इसलिए, इसके परिणामस्वरूप, जब भविष्यवाणी के वचन को अस्वीकार कर दिया जाता है, तो पश्चाताप का अवसर जो वास्तव में वहाँ था, यह उन चीजों की छाया थी जो परमेश्वर करने जा रहा था।

जब प्रभु टिड्डियों की महामारी और आग भेज रहे थे, तो उन्होंने नरमी दिखाई। लेकिन जब अमाज्या और मुझे लगता है कि बड़े पैमाने पर लोगों ने अंततः कहा, हम आमोस के संदेश से कोई लेना-देना नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि आप घर वापस चले जाएँ।

इससे उनकी किस्मत तय हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप, हम जो दर्शन देखते हैं, विजन 3, प्लम लाइन, विजन 4 और विजन 5, सभी एक ऐसे निर्णय के बारे में बात कर रहे हैं, जो इस बिंदु पर अपरिवर्तनीय हो गया है। अध्याय 8 में, विजन 4 गर्मियों के फलों की एक टोकरी का दर्शन है।

और आप सोच सकते हैं, अच्छा, गर्मियों के फलों की टोकरी के दर्शन का भगवान के न्याय से क्या संबंध है? मुझे अपनी कला कक्षा याद है। हमने गर्मियों के फलों की टोकरियाँ बनाई थीं। तो यहाँ क्या हो रहा है? खैर, यहाँ दर्शन में शब्दों का खेल शामिल है जो मौखिक और दृश्य दोनों रूप से न्याय के संदेश को संप्रेषित करता है।

अध्याय 8, पद 1 में यह लिखा है: प्रभु परमेश्वर ने मुझे यह दिखाया। देखो, ग्रीष्म ऋतु के फलों की एक टोकरी। और प्रभु ने आमोस से पूछा, तुम क्या देखते हो? और मैंने कहा, ग्रीष्म ऋतु के फलों की एक टोकरी।

तब प्रभु ने मुझसे कहा, इसका अर्थ यह है: मेरे लोगों, इस्राएल का अंत आ गया है। मैं फिर कभी उन्हें नहीं छोड़ूंगा। याद रखें कि यह विज़न 3 में भी था।

यहोवा की यह वाणी है, उस दिन मन्दिर के गीत विलाप बन जाएँगे। बहुत सारी लाशें होंगी। उन्हें हर जगह फेंक दिया जाएगा।

मौन। तो, ऐसा क्या है जो हमें काफी हानिरहित लगता है, गर्मियों के फलों की एक टोकरी? यह इसराइल की भूमि पर आने वाली मृत्यु और विनाश का एक अशुभ संदेश है। यहाँ क्या हो रहा है? खैर, हमें यह देखने की ज़रूरत है कि गर्मियों के फलों के लिए हिब्रू शब्द कैत्ज़ है।

और फिर वह शब्द जिसका उपयोग इस्राएल पर आने वाले अंत के बारे में बात करने के लिए किया जाता है, वह है कैत्ज़। और इसलिए, कैत्ज़, गर्मियों के फलों की टोकरी, यह संकेत देती है कि कैत्ज़, अंत, इस्राएल पर आ गया है। उस शब्द अंत का उपयोग साहुल रेखा के दर्शन में किया गया है।

और प्रभु कहते हैं कि मैं अपने लोगों को समाप्त करने जा रहा हूँ। मैं फिर कभी उनके पास से नहीं गुज़रूँगा। और इसलिए, यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि इस्राएल अपने इतिहास के अंत पर है, और अब परमेश्वर उनका न्याय करने वाला है।

ग्रीष्म ऋतु के फलों की कटाई इस्राएल के लोगों के लिए कृषि वर्ष की अंतिम घटना थी। यह अब परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मिटा देने से पहले की अंतिम घटना है, और प्रभु उनके अन्याय और एक दूसरे के विरुद्ध उनके द्वारा किए गए अनेक पापों के लिए उनका न्याय करने जा रहे हैं। भविष्यवाणी के वचन को अस्वीकार करने के साथ-साथ, आमोस 8:11 कहता है, देखो, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं देश में अकाल भेजूँगा, न कि रोटी का अकाल, न ही पानी का, परन्तु परमेश्वर के वचनों को सुनने का।

परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करने वालों को दण्डित करने के तरीकों में से एक यह है कि वह वचन सुनने का अवसर छीन लेता है। अमस्याह यह नहीं सुनना चाहता था कि भविष्यवक्ता क्या कहना चाहता था। लोग अंततः यह नहीं सुनना चाहते थे कि भविष्यवक्ता क्या कहना चाहता था, और इसलिए प्रभु एक अकाल भेजने जा रहा है जो अंततः लोगों से परमेश्वर के वचन को छीन लेगा।

अंतिम दर्शन, और एक बहुत ही विनाशकारी चित्र जो हमें इस संदेश के अंत तक ले जाता है, पाँचवें दर्शन में पाया जाता है, जो ढहते हुए पवित्र स्थान का दर्शन है। यह कहता है: मैंने प्रभु को वेदी के पास खड़े देखा, और उसने कहा, जब तक कि दहलीज हिल न जाए, तब तक राजधानियों पर प्रहार करो, और उन्हें सभी लोगों के सिरों पर तोड़ दो, और जो लोग उनमें से बचे रहेंगे, मैं उन्हें तलवार से मार डालूँगा। उनमें से कोई भी भाग नहीं पाएगा, और उनमें से कोई भी आने वाले न्याय से बच नहीं पाएगा।

मुझे लगता है कि ऐसे कई कारण हैं कि ढहते हुए पवित्र स्थान का दर्शन आमोस के न्याय के संदेश का सारांश प्रदान करने का एक बहुत ही प्रभावी तरीका है। नंबर एक, याद रखें कि आमोस ने इसराइल में प्रचार किया था; अध्याय 1, श्लोक 1 हमें बताता है, भूकंप से दो साल पहले। और इसलिए, हम यहाँ जो कल्पना करते हैं कि राजधानियाँ हिल रही हैं, लोगों के सिर पर गिर रही हैं, और परमेश्वर भूमि पर मृत्यु और विनाश ला रहा है, यह न्याय को फिर से भूकंप के रूप में चित्रित कर रहा है।

भूकंप उस विनाश का प्रतीक था जो प्रभु तब लाएगा जब वह अशूरियों द्वारा लाई गई तलवार से लोगों को मार डालेगा। दूसरी बात जो इस बारे में प्रभावशाली है वह यह है कि आमोस की पूरी पुस्तक में, भविष्यवक्ता ने गिलगाल, बेशेबा और बेथेल जैसे स्थानों पर अपने पवित्र स्थानों पर जाने और यह सोचने के लिए उनकी निंदा की कि उनके अनुष्ठान उन्हें बचा सकते हैं।

यह अभयारण्य एक तरह का ठिकाना है, यह शरणस्थल है, यह बम आश्रय है। हम वहाँ जा सकते हैं और जान सकते हैं कि हम सुरक्षित रहेंगे। हालाँकि, अभयारण्य को अध्याय 9 के आरंभिक भाग में ढहते हुए दिखाया गया है। वे अभयारण्य उनकी रक्षा नहीं करेंगे।

और मुझे लगता है कि यहाँ जो दूसरा विचार व्यक्त किया जा रहा है वह यह है कि यह एक ऐसा न्याय है जो इतना गंभीर और इतना व्यापक होने वाला है कि अंततः इससे बचने का कोई रास्ता नहीं होगा। और इसलिए यही बात श्लोक 2 और 3 में व्यक्त की गई है। वे अधोलोक में, पृथ्वी की गहराई में खुदाई कर सकते हैं, लेकिन मेरा हाथ उन्हें ले जाएगा। वे स्वर्ग में चढ़ सकते हैं, लेकिन मैं उन्हें वहाँ से नीचे लाऊँगा।

हमारे पास जो है उसे हम मेरिजम कहते हैं। सबसे बड़ी ऊंचाई, सबसे बड़ी गहराई, वे अधोलोक तक जा सकते हैं, वे परमेश्वर के न्याय से बच नहीं पाएँगे। वे स्वर्ग में चढ़ सकते हैं, वे परमेश्वर से बच नहीं पाएँगे या उससे बच नहीं पाएँगे।

अगर वे माउंट कार्मेल की चोटी पर छिपते हैं, तो मैं उन्हें खोजकर ले जाऊँगा। हालाँकि, अगर वे समुद्र के तल पर मेरी नज़र से छिपने की कोशिश करते हैं, तो एक और मर्जिम, भगवान अंततः उन्हें नष्ट कर देंगे। वे इस न्याय से बच नहीं पाएँगे।

ठीक है, आमोस के न्याय के संदेश के अंत में, हमें अंततः आशा के संदेश की ओर ले जाने वाली कोई बात मिलती है। लेकिन मैं अध्याय 9, पद 9 और 10 में न्याय खंड के अंतिम दो पद पढ़ना चाहता हूँ। क्योंकि देखो, मैं आज्ञा दूँगा और मैं इस्राएल के घराने को राष्ट्रों के बीच हिलाऊँगा, जैसे कोई छलनी से हिलाता है, लेकिन एक भी कंकड़ धरती पर नहीं गिरेगा।

मेरे लोगों के सभी पापी तलवार से मारे जाएँगे, जो कहते हैं, विपत्ति हमें नहीं पकड़ेगी। तो, हम लगभग यह विचार प्राप्त कर लेते हैं, यह पूर्ण, यह कुल विनाश है। कोई भी जीवित नहीं बचा है, कोई उम्मीद नहीं है।

ये लोग देश के सभी पापी हैं, लेकिन इन सबके बीच, इस संदेश के अंत में, हमारे पास आशा की एक पेशकश है। अंत में, नौ अध्यायों के लिए न्याय, न्याय और न्याय के इस अथक संदेश के बाद, आशा का एक संदेश है जो हमें आमोस अध्याय 9, श्लोक 11 से 15 में मिलता है। और मैं बस इस अंश को पढ़ने जा रहा हूँ क्योंकि यह उन सभी भयानक चीजों के साथ संतुलन बनाने के लिए महत्वपूर्ण है जिन्हें हम पढ़ रहे हैं जिन्हें करने के लिए परमेश्वर ने तैयारी की है।

उस दिन मैं दाऊद की गिरी हुई झोपड़ी को खड़ा करूँगा, और उसकी टूटी हुई जगहों को सुधारूँगा। मैं उसके खण्डहरों को फिर से खड़ा करूँगा, और उसे पुराने दिनों की तरह फिर से बनाऊँगा, ताकि वे एदोम के बचे हुए लोगों को अपने अधिकार में कर लें, और मेरे नाम से

कहलाने वाली सभी जातियों को अपने अधिकार में कर लें, यहोवा जो यह करता है, उसकी यह वाणी है। देखो, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहे हैं, जब हल चलानेवाला काटनेवाले को और दाख की बारी को रौंदनेवाला, अर्थात् बीज बोनेवाले को पकड़ लेगा।

पहाड़ों से मीठी दाखमधु टपकेगी, और सभी पहाड़ियाँ उसमें बह जाएँगी। मैं अपने लोगों, इस्राएल के भाग्य को बहाल करूँगा, और वे उजड़े हुए शहरों का पुनर्निर्माण करेंगे और उनमें बसेंगे। वे दाख की बारियाँ लगाएँगे और उनकी दाखमधु पिँएँगे।

वे बगीचे लगाएँगे और उनके फल खाएँगे। मैं उन्हें उनकी ज़मीन पर लगाऊँगा, और वे उस ज़मीन से कभी नहीं उखाड़े जाएँगे जो मैंने उन्हें दी है, यहोवा तुम्हारा परमेश्वर कहता है। इसलिए, न्याय होने के बाद, वहाँ फिर से बहाली होगी।

परमेश्वर अपने लोगों को वापस देश में ले आएगा। परमेश्वर दाऊद के वंश को पुनः स्थापित करेगा। ध्यान दें कि यह इस्राएल के न्याय से परे देख रहा है, और अंततः यहूदा के पतन पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है।

आमोस ने भविष्यवाणी के रूप में इसे देखा। और जब इस्राएल वापस अपने देश में आता है, तो अपने दुश्मनों द्वारा तबाह होने के बजाय, टिड्डियों द्वारा अपनी फसलें खाने के बजाय, भगवान द्वारा सूखा, फफूंद और फफूंदी भेजने के बजाय, और वे सभी चीजें जिनके बारे में उसने पुस्तक के बाकी हिस्सों में चेतावनी दी है, वहाँ यह वादा है कि वहाँ अविश्वसनीय कृषि समृद्धि होने जा रही है। अब, जैसा कि हम इस वादे को देखते हैं, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि आलोचनात्मक विद्वानों ने अक्सर इन अंशों के बारे में जो कहा है वह यह है कि ये अक्सर संपादकों और संपादकों के बाद के संस्करण हैं जो किसी तरह से लोगों को आशा प्रदान करने और भविष्यवाणी संदेश की कठोरता को नरम करने की कोशिश कर रहे थे।

हालाँकि, मेरे पास जो समस्याएँ और मुद्दे हैं, उनमें से एक यह है कि हम देखते हैं कि भविष्यवक्ताओं की भूमिका, पुराने नियम में हमारे पास मौजूद हर भविष्यवाणी की किताब में न्याय और उद्धार दोनों शामिल हैं। और इसलिए मुझे लगता है कि यह धारणा कि भविष्यवक्ताओं ने केवल न्याय का उपदेश दिया और इस तरह की आशा का संदेश देना अनुचित होगा। मुझे लगता है कि यह एक ऐसी धारणा है जिस पर कुछ चुनौतीपूर्ण सोच की आवश्यकता है। हमें यह भी एहसास हुआ है कि पहले की आलोचनात्मक विद्वता भविष्यवक्ता के मूल शब्दों और पाठ में किए गए इन बाद के संस्करणों या संपादकीय संशोधनों के बीच एक मजबूत अंतर करेगी।

हालाँकि, इस बात पर भी जोर दिया गया है, यहाँ तक कि कई आलोचनात्मक विद्वानों के बीच मान्यता भी है कि हमें विहित पाठ को उसी रूप में देखना चाहिए जैसा वह है। मूल पैगम्बर और बाद के संपादक के बीच का अंतर शायद इतना महत्वपूर्ण न हो क्योंकि विहित पाठ, आधिकारिक संदेश, दोनों को शामिल करता है। मेरा मानना है कि शास्त्र निर्माण की प्रक्रिया में, ईश्वर ने पैगम्बर के मूल वचन के माध्यम से बात की, ईश्वर ने पैगम्बर के माध्यम से बात की क्योंकि संदेश लिखा गया था, और ईश्वर ने उन संपादकों के शब्दों के माध्यम से भी बात की होगी जिन्होंने इन पुस्तकों को अंतिम विहित रूप में आकार दिया और बनाया जो आज हमारे पास है।

और इसलिए, हमें भविष्यवक्ता के मूल शब्दों या संपादक के बाद के शब्दों के बीच अंतर करना चाहिए या नहीं, यह अंततः कोई महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं है क्योंकि ईश्वर इस पूरी प्रक्रिया को प्रेरित करता है। इस विचार के साथ कुछ भी असंगत नहीं है कि भविष्यवक्ता ने खुद इस तरह के संदेशों का प्रचार किया। कुछ लोग तर्क देंगे, ठीक है, यह अंश दाऊद के घराने के पतन और यहूदा के अंतिम निर्वासन के बारे में बात कर रहा है।

अगर हम मानते हैं कि भगवान आमोस से भविष्यवाणी के तौर पर बात कर रहे थे, तो 8वीं सदी में आमोस को ऐसा होते हुए देखने में कोई समस्या नहीं है। यहूदा भी असीरियन संकट के प्रभावों को महसूस करने लगा था। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है।

यह विचार कि एक संपादक ने आमोस के बाद के कुछ संदेशों को स्पष्ट किया होगा और हमें यह देखने में मदद की होगी कि यह इज़राइल और यहूदा दोनों पर लागू होता है, यह भी एक संभावना है। दूसरी बातों में से एक जो हमें ध्यान में रखनी है, वह है कि ईश्वर की वाचा प्रकृति को याद रखें जैसा कि निर्गमन 34, श्लोक 6 और 7 में संक्षेप में बताया गया है, कि ईश्वर करुणा का ईश्वर है, हेसेड का ईश्वर है, एक ईश्वर जो क्रोध करने में धीमा है और जो उसके पापों को क्षमा करता है और जो एक हजार पीढ़ियों तक अपनी दया दिखाता है। वह एक ईश्वर भी है, निर्गमन 34, 7, जो दोषियों को माफ नहीं करता है और वह उन्हें जवाबदेह ठहराता है और वह कुछ परिस्थितियों में पिताओं के पापों का दंड उनके बच्चों को भी देता है।

ये परमेश्वर के चरित्र के दो दोहरे पहलू हैं। तथ्य यह है कि भविष्यवक्ता परमेश्वर के प्रवक्ता हैं, हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वे इन दोनों बातों पर ज़ोर देते हैं। आमोस जैसे भविष्यवक्ता द्वारा न्याय के इस अथक संदेश का प्रचार करने और लोगों को आशा के शब्द देने में कोई असंगति नहीं है।

इसका मतलब यह नहीं है कि आमोस ने अपने हर संदेश को आशा के वादे के साथ समाप्त किया। आप शेर के मुंह से निकाले जाएंगे और वहाँ सिर्फ़ एक पूंछ, एक कान और एक पैर के अलावा कुछ नहीं बचेगा। लेकिन चिंता न करें, परमेश्वर अंततः आपको बहाल करेगा।

लेकिन किसी समय, भविष्यवक्ता के मंत्रालय में, उसके लिए लोगों को परमेश्वर की वाचा की प्रतिज्ञाओं के प्रति प्रतिबद्धता की याद दिलाना महत्वपूर्ण था। और इसमें कोई असंगति नहीं है, या ऐसा कोई कारण नहीं है कि हम तुरंत मान लें कि परमेश्वर ने आमोस को यह नहीं बताया होगा। परमेश्वर ने इस्राएल के मूल भविष्यवक्ता के रूप में मूसा को, कुछ मायनों में इस्राएल के इतिहास को वास्तव में घटित होने से पहले ही प्रकट कर दिया था।

और मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि उस इतिहास में क्या शामिल था और व्यवस्थाविवरण अध्याय 30 में उस इतिहास में क्या शामिल था। वह कहता है, व्यवस्थाविवरण 30, मूसा पहचानता है कि वे आज्ञा नहीं मानेंगे, वे प्रभु का अनुसरण नहीं करेंगे, उन्हें देश से बाहर निकाल दिया जाएगा। लेकिन जब ऐसा होता है, और लोग प्रभु तुम्हारे परमेश्वर के पास लौट आते हैं, और तुम और तुम्हारे बच्चे और तुम उसकी आवाज़ और वह सब कुछ मानते हो जो मैं तुम्हें पूरे दिल से आज्ञा देता हूँ, तो परमेश्वर तुम्हारा भाग्य बहाल करेगा और तुम पर दया करेगा।

और मूसा आगे कहता है कि जब वे उस देश में वापस आएं, जहां से उन्हें निकाल दिया गया था। मूसा एक भविष्यवक्ता के रूप में इस्राएल के इतिहास को जानता है, इससे पहले कि वह कभी हुआ हो। और इसलिए, हमारे लिए यह सोचना असंगत नहीं है कि जैसे ही परमेश्वर ने आमोस को भविष्य के बारे में बताया और यहूदा के लोगों के लिए परमेश्वर क्या करने की तैयारी कर रहा था और यहूदा और इस्राएल के लोगों के लिए परमेश्वर क्या करने जा रहा था, यह आमोस के लिए समझना असंगत नहीं था, यह विचार अकल्पनीय नहीं है कि आमोस न केवल अथक न्याय का संदेश दे सकता था, बल्कि हमें स्थायी आशा का वादा भी दे सकता था।

अब मैं चाहता हूँ कि हम इस संदेश को पुराने नियम के धर्मशास्त्र के प्रकाश में समझें। अध्याय 32 की आयत 11 में लिखा है, उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए तम्बू को खड़ा करूँगा। परमेश्वर दाऊद के घराने को फिर से स्थापित करने जा रहा है।

परमेश्वर अंततः दाऊद के राज्य के लिए अपनी वाचा की प्रतिज्ञाओं को पूरा करने जा रहा है क्योंकि प्रभु दाऊद के घराने को पुनर्स्थापित करने जा रहा है। और भले ही दाऊद का राज्य अंततः एक जीर्ण-शीर्ण आश्रय की तरह बन जाएगा, लेकिन उन्होंने पहले ही कुछ अर्थों में इसका अनुभव कर लिया है। दस गोत्र पीछे हट गए हैं।

हालाँकि दाऊद का घराना अंततः अपमानित होने जा रहा है और एक गिरा हुआ घर बन जाएगा, परमेश्वर इसे बहाल करेगा। परमेश्वर ने पद 12 में यह भी वादा किया है कि परमेश्वर दाऊद के घराने को बहाल करेगा ताकि एक बार फिर दाऊद का राजा एक शक्तिशाली सैन्य नेता बन जाए। और इसलिए अंततः, हम यहाँ मसीहा के शासन और शासन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

और जब यह प्रभुत्व पुनः स्थापित होगा, तो क्या होगा, श्लोक 12 कहता है, कि वे एदोम के बचे हुए लोगों पर कब्जा कर सकते हैं। परमेश्वर भविष्य के दाऊदवंशीय राजा को एक राजवंश और फिर उसके शत्रुओं पर प्रभुत्व का वादा कर रहा है। और यह उन मसीहाई वादों के अनुरूप है जिन्हें हम पूरे पुराने नियम में देखते हैं।

उत्पत्ति अध्याय 49 में, जब याकूब अपने बेटों को आशीर्वाद देता है और यहूदा को प्रभुत्व देने का वादा करता है, तो यहूदा, तुम्हारे भाई, तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। तुम्हारा हाथ तुम्हारे शत्रुओं की गर्दन पर होगा। तुम्हारे पिता के पुत्र तुम्हारे सामने झुकेंगे।

पद 10 में, राजदंड यहूदा से दूर नहीं होगा और शासक की लाठी उसके पैरों के बीच से तब तक नहीं हटेगी जब तक कि कर न आ जाए, और सभी लोग उसके अधीन हो जाएँगे। बिलकुल शुरुआत में, परमेश्वर यहूदा और उसके कबीले को एक प्रभुत्व और राजवंश का वादा कर रहा है जिसमें राष्ट्रों पर प्रभुत्व शामिल होगा। इसकी पहली पूर्ति दाऊद में है।

इसकी अंतिम पूर्ति यीशु मसीह में है। पुराने नियम में मसीहा के सिद्धांत और समझ के विकास में गिनती अध्याय 24 एक और महत्वपूर्ण मसीहाई अंश है। बिलाम, यह व्यक्ति जिसे इस्राएल के लोगों पर श्राप लगाने के लिए नियुक्त किया गया था, इसके बजाय, जब भी वह अपना मुंह खोलता है, तो एक आशीर्वाद निकलता है।

और यहाँ वह आशीर्वाद है जो गिनती 24:17 में इस्राएल को दिया गया है। याकूब से एक सितारा निकलेगा, और इस्राएल से एक राजदण्ड उठेगा। हम एक ऐसे राजा के बारे में बात कर रहे हैं जो उदय होने वाला है।

वह मोआब के माथे को कुचल देगा। वह शेत के सब बेटों को तोड़ डालेगा। एदोम को बेदखल कर दिया जाएगा।

सेईर, उसके शत्रु, भी बेदखल कर दिए जाएँगे। इस्राएल वीरता से काम कर रहा है, और याकूब से एक प्रभुत्व का प्रयोग करेगा और शहर के बचे हुए लोगों को नष्ट कर देगा। बिलाम कहता है, अरे, मैं इन लोगों पर श्राप नहीं लगा सकता।

हर बार जब मैं अपना मुंह खोलता हूँ, तो परमेश्वर उन्हें आशीर्वाद देना चाहता है। परमेश्वर अंततः इस्राएल में एक राजा को खड़ा करने जा रहा है जो अपने शत्रुओं पर शासन करेगा और उन पर शासन करेगा। वहाँ वर्णित लोगों में से एक एदोम और सेईर है; वे एसाव के वंशज हैं।

और इसलिए, 2 शमूएल अध्याय 8, श्लोक 11 और 12 में जब दाऊद सत्ता में आता है, तो वह उन लोगों में से एक होता है जिन्हें वह अपने अधीन करता है, यानी एदोमियों को। दाऊद उत्पत्ति 49 और संख्या 24 की अंतिम पूर्ति है। मसीहा, भविष्य का दाऊदवंशीय राजा, यहाँ जो वादा किया जा रहा है उसकी अंतिम पूर्ति है।

दाऊद के राजवंश में, परमेश्वर ने उस घराने को स्थापित करने का वादा किया था, लेकिन उसने यह भी कहा था, यदि तुम्हारे बेटे अवज्ञा करेंगे, तो मैं उन्हें दण्ड दूंगा। इस कारण, दाऊद का घराना एक उजड़े हुए, गिरे हुए घर जैसा हो गया था। इसने निश्चित रूप से अपनी महिमा और अपनी शक्ति खो दी थी, लेकिन यह अंश वादा करता है कि, अंततः, परमेश्वर इसे बहाल करने जा रहा है।

दूसरी बात जो इस वादे का हिस्सा है, वह सिर्फ़ दाऊद के घराने के लिए वादा नहीं है, बल्कि अंततः आयत 13 से 15 में सभी लोगों के लिए वादा है। और यह अंश कहता है कि भविष्य में जब मैं अपने लोगों को पुनर्स्थापित करूँगा, तो हल चलाने वाला, काटने वाले, अंगूरों को रौंदने वाले, बीज बोने वाले से आगे निकल जाएगा। परमेश्वर इस्राएल को उस अविश्वसनीय कृषि उपज को पुनः प्राप्त करने का वादा करता है जिसका आनंद लेने के लिए उन्हें तब बनाया गया था जब परमेश्वर ने उन्हें शुरू में वादा किए गए देश में ले जाया था।

यह दूध और शहद से भरी भूमि थी। परमेश्वर उन्हें अविश्वसनीय तरीकों से आशीर्वाद देना चाहता था। यह एक वादा है कि एक दिन वे इसका अनुभव करेंगे।

काव्यात्मक रूप से, ये पंक्तियाँ यहाँ एक चिआस्टिक संरचना के रूप में रखी गई हैं, जो हमें दिखाती हैं कि वे एक फसल काटने के बाद ही दूसरी फसल बोने का समय लेंगे। यहाँ पंक्तियों को देखें। हल चलाने वाला, जो कि एक रोपण गतिविधि है, काटने वाले से आगे निकल जाएगा, जो कि एक कटाई गतिविधि है।

लेकिन दूसरी पंक्ति में, अंगूर को रौंदने वाला, जो कि एक कटाई की गतिविधि है, बीज बोने वाले से आगे निकल जाएगा। और इसलिए, उनकी फसल में बहुत अधिक उपज होगी। वे एक फसल के बाद ही दूसरे कृषि मौसम की शुरुआत नहीं करेंगे।

यहाँ और भी बेहतर तस्वीर है। पहाड़ों से मीठी शराब टपकेगी और पहाड़ियाँ उसके साथ बहेंगी। तो, पहाड़ियों से शराब की नदियाँ बहेंगी।

यह देश में बहने वाले दूध और शहद से भी बेहतर है। परमेश्वर की ओर से अविश्वसनीय उदारता, आनंद और आशीर्वाद। परमेश्वर अपनी वाचा के वादों को पूरा करने जा रहा है।

यहोवा कहता है, "मैं अपने लोगों, इस्राएल के भाग्य को बहाल करूँगा। वे उजड़े हुए शहरों का पुनर्निर्माण करेंगे और उनमें बसेंगे। वे अंगूर के बाग लगाएँगे और उनकी शराब पीएँगे।"

वे बगीचे लगाएँगे और उनके फल खाएँगे। मैं उन्हें उनकी ज़मीन पर लगाऊँगा, और वे उस ज़मीन से कभी नहीं उखाड़े जाएँगे जो मैंने उन्हें दी है, यहोवा तुम्हारा परमेश्वर कहता है। इसलिए, निर्वासन की शर्तें उलटी होने जा रही हैं।

प्रभु इस्राएल के लोगों के भाग्य को बहाल करने जा रहे हैं। और इसलिए, यहाँ यह वादा उस युगांतिक दृष्टि के अनुरूप है जो हमें पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में मिलती है कि न्याय अंतिम शब्द नहीं है और अंततः, यह बहाली जो परमेश्वर ने भविष्य में वादा की है और वह अंतिम दिनों के बारे में बात करता है, कि यह बहाली जो भविष्य में होने जा रही है, वह उन सभी वाचा वादों की पूर्ति लाएगी जो परमेश्वर ने इस्राएल से किए हैं। मैं कुछ बाद के सत्रों में जो करना चाहूँगा, जब हम लघु भविष्यवक्ताओं में युगांतिक भविष्य से संबंधित भविष्यवाणियों के बारे में बात करेंगे, तो मैं इन पुराने नियम के अंशों को लेना चाहूँगा और उनके पुराने नियम के संदर्भ में उनका क्या अर्थ था और हमें थोड़ा और पूरी तरह से समझने में मदद करूँगा कि जब हम इन्हें नए नियम के प्रकाश में देखते हैं तो हमारा क्या मतलब होता है।

जब भविष्यवक्ता अंतिम दिनों के बारे में बात करता है, तो नए नियम के प्रकाश में इसका क्या अर्थ है? और हम नए नियम में जो देखने जा रहे हैं वह यह है कि अंतिम दिन केवल दूसरे आगमन से ठीक पहले के समय को संदर्भित नहीं करते हैं। वे केवल प्रभु के दिन और महान क्लेश के समय को संदर्भित नहीं करते हैं। लेकिन अंतिम दिन उस चीज़ के बारे में बात करते हैं जो यीशु के पहले आगमन के साथ शुरू हुई थी।

और लोग अक्सर यह सवाल पूछते हैं कि आखिर के दिनों से हमारा क्या मतलब है? क्या हम आखिरी दिनों में जी रहे हैं? वे वास्तव में जानना चाहते हैं कि क्या यीशु जल्द ही वापस आ रहे हैं। लेकिन नए नियम का दृष्टिकोण यह है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा वादा किए गए आखिरी दिन पहले ही शुरू हो चुके हैं। और भविष्यवक्ता जिन आशीषों के बारे में बात करने जा रहे हैं, उनमें एक अभी और एक अभी नहीं वाला पहलू है। कुछ अर्थों में, आखिरी दिन, वे दिन जो आने वाले हैं जिनके बारे में भविष्यवक्ता बात कर रहे हैं, वे आखिरी दिन तब शुरू हुए जब इस्राएल को वापस देश में लाया गया।

और एक अस्थायी तरीके से, उन्होंने उन आशीषों का अनुभव करना शुरू कर दिया जिनका वादा परमेश्वर ने उनके लिए किया था। हालाँकि, वे पूरी तरह से प्रभु के पास नहीं लौटे थे और इसलिए उन आशीषों का पूरी तरह से अनुभव नहीं किया गया था। एक बड़े तरीके से और अधिक नाटकीय तरीके से, अंतिम दिनों की आशीषें यीशु के पहले आगमन के साथ आती हैं।

जैसा कि हम देखते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में आमोस अध्याय 9 को कैसे उद्धृत किया गया है, याकूब इस अंश का उपयोग परमेश्वर के लोगों में अन्यजातियों को शामिल करने के बारे में बात करने के लिए करता है। आमोस ने उस समय जो वादा किया था कि दाऊद का राजा इन राष्ट्रों पर शासन करेगा और उन पर अधिकार करेगा और राष्ट्रों को उसके नाम से पुकारा जाएगा, याकूब कहता है कि यह पूरा हो रहा है क्योंकि पॉल और सीलास, ये ईसाई मिशनरी, सुसमाचार की व्याख्या करते हैं और अन्यजातियों को इसका प्रचार करते हैं और अन्यजाति राज्य में आते हैं। यही वह बात है जिसकी आमोस बात कर रहा है।

लेकिन इस पैटर्न की पूर्णता यीशु के दूसरे आगमन पर होती है जब परमेश्वर द्वारा की गई वाचा की प्रतिज्ञाओं की पूर्ण प्राप्ति होती है। परमेश्वर के नए वाचा के लोग पूरी तरह से बन चुके हैं। इस्राएल को उसके आशीष के स्थान पर बहाल किया जाता है और परमेश्वर अंततः अपनी सृष्टि पर शासन और शासन करेगा और दाऊद के राजा का प्रभुत्व बहाल किया जाएगा ताकि वह सभी चीजों पर शासन करे।

आमोस अथक न्याय का संदेश देता है, लेकिन इसके अंत में आशा का वादा है। ईसाई होने के नाते, हम इसे पढ़ते हैं, और हम महसूस करते हैं कि आखिरकार, ये वादे जो परमेश्वर इस्राएल से, परमेश्वर के लोगों से, और अंततः राष्ट्रों से कर रहा है कि वे इस राज्य में शामिल होंगे, अंततः, हम देखते हैं कि ये वादे हमारे लिए यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरे होते हैं।

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा लघु भविष्यद्वक्ताओं पर अपनी व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 10 है, न्याय के दर्शन और पुनर्स्थापना का वादा, आमोस 7-9।